Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

डा. अरविन्द अक्कूक जीवन आ साहित्यक विश्लेषण

डा. हीरा मंडल
(सेवानिवृत्त)शोध-निर्देशक,एशोशिएट प्रोफेसर, पटना विश्वविद्यालय, पटना

प्रकाश कुमार चौधरी
(शोधार्थी) विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

Article Info

Accepted : 20 Jan 2025
Published : 10 Feb 2025

Publication Issue :
January-February-2025
Volume 8, Issue 1

Page Number : 44-51

शोध-सार- मैथिली नाट्य-साहित्य मे अनेको नाटककार भेलाह अछि आ एखनो भऽ रहल छथि। जँ मैथिली नाटककारक सूची बनाओल जाय त ओहि सूची मे एक नाम डा. अरविन्द अक्कूक नाम सेहो रहबे करत किएक त डा. अरविन्द अक्कू मैथिली मे अनेकानेक नाटकक लिखि क अपन वंशजक मर्यादाकेँ त रखबे कयलाह अछि संगहि मैथिली साहित्यमे अपन नाम स्वर्णक्षर मे लिखबा लेलाह अछि। ई मैथिली साहित्यक जानल-मानल नाटककार छथि। एखनो ई निरंतर अपन पिता सदृश सृजनशील छथि।

ई संस्कृत साहित्यक अध्येता रहल छथि मुदा लेखन हिनक मूलत: मैथिलीमे रहैत छनि। ओना ई हिन्दीमे रचना सेहो करैत छथि लेकिन नाम मात्रक। ई मैथिली मे जे रचना करैत छथि से अभावक पूर्तिक लेल। मैथिलीमे ई लिखनाइ जे प्रारम्भ कयने छलाह से अभावे पूर्तिक लेल आ एखनो अभावेकेँ पूर्ति करबाक लेल लिखैत छथि। सत्य पूछल जाय त हिनक विवशता छन्हि मैथिली मे लिखब कारण जँ ई नहि लिखतथि त अनेको ठाम शोकाकुल जकाँ वातावरणं बन रहितैक मुदा से ई होबय दैत छथि। ई एको बेर एहन नहि कयने होयताह जे कोनो संस्था हिनकासँ नाटक लिखबाक सादर अनुरोध कयने होनि आ ई हुनक अनुरोधकेँ अस्वीकार कयने होथि। ई हुनका लोकनिक उत्साहकेँ आओर बल प्रदान क दैत छथि।

मुख्य शब्द- डा. अरविन्द अक्कूक, मैथिली नाट्य-साहित्य, प्रकृतिक, अभावक, पूर्तिक।

एहि संसारमे जतेक चीज अछि, ओकर बनावटकेँ ध्यानसँ देखलापर ज्ञात होइत अछि जे एकरा बनाबटक आधारपर दू भागमे विभाजित कयल जा सकैत अछि जाहिमे पहिल अछि- प्रकृतिक बनाओल आ दोसर अछि - लोकक बनाओल। ओना किछु चीज एहनो अछि जकरा पशु-पंक्षी, मुस, चुट्टी, दिबार आदि सेहो बनबैत अछि। ई निर्माण, एक प्रक्रिया अछि जे विभिन्न अवस्थामे विभिन्न गतिएँ चलैत रहैत अछि।

प्रकृतिक द्वारा बनाओल चीज सभमे अनेको चीज एहन अछि जाहिमे समानता अछि आ कतेको चीज एहन अछि जाहिमे समानता नहि अपितु भिन्नता अछि मुदा जखन आओर महीन दृष्टिसँ देखैत छी जे एहूमे अनेक वर्ग-उपवर्गमे विभाजन कयल जा सकैत अछि जाहिसँ ओकर सम्यक अध्ययन कयल जा सकैत अछि। विभाजनक बाद जे एक वर्ग वा उपवर्गमे रहैत अछि वा राखल जाइत अछि ओकरा एक परिवारक कहल जाइत अछि। एहिना लोक सभमे सेहो परिवार वा वंश होइत अछि

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

जे प्रकृतिक द्वारा बनाओल अछि मुदा हम मनुष्य ओहिमे मिलावट करैत छी आ दोसराक वंश वा परिवारक संग सामाजिक मान्यताक अनुरुप संबंध स्थापित करैत छी जाहिसँ वंश–वृद्धिमे निरंतरता आबैत छैक।

विषय प्रवेश- mसाओन मासमे जखन वर्षा होइत छैक आ ओहि वर्षासँ जखन खेत नमगर भऽ जाइत अछि अर्थात खेतमे हाल भऽ जाइतछैक तखन ओहि पानिक प्रभावसँ ओहि खेतमे पहिलेसँखसल बीया अंकुराय लागैत अछि आ समय पाबिओ बाहर आबि जाइत अछि आएका टा गाछक रूप लऽ लैत अछि मुदा ओ सभगाच किसानक लेल धनि सन। ओहि गाछ सभकेँ आनेरुआ गाछ कहि ओकर उपेक्षा करैत ओकरा उखाड़िकऽ फेक देल जाइत अछि आ किसान अपना घरमे जाहि बीया के साल–दू–सालसँ जोगाकऽरखने रहैत छैक, ओहि बीयाकेँ खेतकेँ जोति–कोड़िकऽ, ओहि खेतमे बागु करैत छैक आ ओकरा पर ओहिना दृष्टि रखने रहैत छैक जेना कोनो लेखकक रचनापर समालोचक दृष्टि रखने रहैत छैक। तखन ओ बीया एक दिन अंकुरा कऽ भूमिसँ ऊपर आबि जाइत छैक आ किसान ओकर स्थितिक अनुसार खाद–पानि दऽदैक छैक आ समयपाबि ओउपजा दैत छैक। तें कहल जाइत छैक जे अनेरुआक मोजर नहि होइत छैक। एहिना लोकक संग सेहो होइत छैक। जाहिव्यक्तिकेँ नीक लोकक संग भेटैत छैक ओ व्यक्ति प्राय: नीक बनैत छैक। पहि बातकेँ ध्यानमे राखि जखन अक्कू जीक जीवनकेँ देखैत छी तऽ बुझना जाइत अछि जे हिनका उपर दू–दू टा साहित्यकारक छत्र–छाया पड़ैत रहलनि अछि। पहिल हिनक पिता– पु गोविन्द झा जे मैथिली साहित्यमे एक विशेष हस्ताक्षरक रुपमे जानल जाइत छथि। एकर कारण अछि जे हिनको उपर एकटा साहित्यकार पिताक हाथ रहल छनि। "अपन पिता, महावैयाकरण पण्डित दीनबन्धु झाक पाण्डित्यक प्रभाव हिनकापर प्रचुर मात्रामे पड़ल छनि। हुनके सान्निध्यमे ई विद्यार्जन कयलनि, फलत: संस्कृत शास्त्रक, ओकर व्याकरण, साहित्य ओ दर्शनक प्रगाढ़ ज्ञान–प्राप्त कयलनि। एकर अतिरिक्त ई अंगरेजी आ बंगला साहित्यक सेहो अध्ययन कयने"[1] छलाह। अपन अध्यवसायसँ अर्जित ज्ञानकेँ ई मैथिली साहित्यक उन्नयनमे आजीवन लगबैत रहलाह।

पं. गोविन्द झा बहुमुखी प्रतिभाक धनी मैथिली ओ संस्कृतक गम्भीर विद्वान, मातृभाषाक सरस साहित्यकार तथा मान्य भाषा–वैज्ञानिक छलाह। हिनक रुचि जेहने अनुसन्धानमे रहैत छलनि तेहने मनोरम कविताक रचनामे। ई कविकरूपमे अपन समयक अग्रगण्य, नाटककारकरूपमे तँ अतिश्रेष्ठ, कथाकारकरूपमे तँ ओहूमे विशिष्ट स्थानक अधिकारी, निबन्ध आ समालोचनाक क्षेत्रमे अगुआ छलाह, अनुवादककरूपमे सेहो सिद्धहस्त। भाषा विज्ञानपर हिनक रचित पोथी – मैथिली आ हिन्दी दुनूमे चर्चित, प्रशंसित अछि। छन्दशास्त्रपर सेहो हिनक अधिकार विलक्षण छलनि। "प्रकाशित पोथीक नाम थिकनि– बसात (1954), राजा शिवसिंह (1972), अन्तिम प्रणाम (1982) – नाटक; छन्द शास्त्र (1960), लघुविद्योतन (1963), उच्चतर मैथिली व्याकरण (1979) – व्याकरण; मैथिलीक उद्गम ओ विकास (1968) – भाषाविज्ञान; उमेश मिश्र (1984) – जीवनी मालविकाग्निमित्र (1947), चण्डीदास (1983) – अनुवाद विभागसार (1975), वर्णरत्नाकर (1980), विद्यापति – गीतावली (1981), गोविन्ददास–भजनावली (1982), स्मृति–संध्या भाग – 2 (1984) – सम्पादित"[2]। एहिमे वर्णरत्नाकरक सम्पादन संयुक्त रूपसँ ई प्रो आनन्द मिश्रक संग कयने छलाह। एकर अतिरिक्त पुस्तकक भूमिका रूपमे तथा विभिन्न पत्र–पत्रिकामे छिड़िआयल कतोक रचना छनि।

एतेक रचना करब तखने संभव होइत छैक जखन परिवारमे ओहन वातावरण रहैत छैक वा ओहन संस्कार भेटल रहैत छैक वा ईश्वरक असीम कृपा होइत छैक। पं. गोविन्द झापर तीनू बात देखबामे आबैत अछि कारण हिनक परिवारक वातावरण साहित्य–सृजनक रहल अछि संगहि हिनका संस्कार सेहो ओहि अनुरूप भेटल छलनि आ बिनु ईश्वरक कृपाकेँ ई सभ संभव नहि होइत छैक।

पं. गोविन्द झाक पिताक संबंधमे डॉ. भीमनाथ झा लिखने छथि– "महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झा मैथिलीक 'पाणिनि' कहत जाइत छथि। ई 'मिथिलाभावषा–विद्योतन' लिखि मंडलीक स्वतन्त्र स्वरूपकेँ आओर अधिक ठोस, आओर

अधिक पुष्ट, आओर अधिक प्रामाणिक तँ वनयबे कयलनि जे 'मिथिला भाषा कोष'क, संकलन-प्रकाशन कऽ जे स्वतन्त्र भाषाक हेतु सभसँ आवश्यक वस्तु मानल गेल अछि ताहू दिशाक पथकेँ प्रशस्त कऽ देलनि। मिथिला भाषा विद्योतन-सन उत्कृष्ट व्यकरण-ग्रंथकरचनाक हेतु हिनका, 1941 ईमे, साहित्य परिषदक मधुबनी-अधिवेशनमे 'महावैयाकरण'क उपाधिसँ सम्मानित कयल गेलनि।

विषय विस्तार- पं दीनबन्धु झाक जन्म इसहपुर (मधुबनी)क मरड़य सिहौलि मूलक काश्यप गोत्रीय परिवारमे, 1878 ई मे अश्विन शुक्ल चतुर्दशी वृहस्पतिकेँ भेलनि। हिनक पिताक नाम विद्यानाथ झा रहनि, जे फेकू झाक नामसँ प्रसिद्ध छलाह। आरम्भिक शिक्षा प्राप्त कयलाक बाद उच्च अध्ययनक हेतु ई 1893 ई मेकाशी गेलाह, जतऽ तत्कालीन पण्डित प्रकाण्ड म म शिवकुमार शास्त्रीसँ सात वर्ष धरि विधिवत् शिक्षा ग्रहण कयलनि। 1908 ई मे ई धौतपरोक्षोत्तीर्ण भेलाह। सर्वप्रथम होयबाक कारणेँ हिनका धोतीक संग दोशाला सेहो देल गेलनि। लगभग समस्त जीवन ई अध्ययन-अध्यापन कार्य कयलनि तथा देवघर, लक्ष्मीपुर, गाम, सरिसव आ दरभंगामे रहि शतावधि मेधावी छात्रकें प्रतिष्ठित विद्वान बनौलनि। हिनक निधन 77 वर्षक अवस्थामे 26 जनवरी 1955 ई केँ भेलनि।

ई संस्कृत काव्य, व्याकरण, धर्मशास्त्र आदि विषयक रमेश्वरप्रतापोदयम्, समासशक्तिदीपिका, बकारविवेकः, श्राद्धाधिकारिनिर्णयः प्रभृति अनेक ग्रन्थ ओ निबन्धक रचना कयने छथि। मैथिलीमे हिनक चारि गोट ग्रन्थ प्रकाशित अछि- 1 - मिथिलाभाषाविद्योतन (1945), 2-धातुपाठ (1949-50), 3- मिलिभाषा कोष (1950) तथा 4- अलंकार-सागर (1967)। अलंकार-सागर पूर्ण नहि भऽ सकल तथा एकर प्रकाशनो लेखकक निधनक बादे भेल।"[3]

डॉ. अरविन्द 'अक्कू' ओहि परिवारक सदस्य छथि जाहि परिवारक मुखिया मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध साहित्यकार छलाह आ लगातार दू पीढ़ीसँ मैथिली साहित्यक सेवामे लागल रहैत आबि रहल छलाह अर्थात डॉ. अरविन्द 'अक्कू'क पिता पं. गोविन्द झा आ बाबा 'महावैयाकरण'पं दीनबन्धु झा दुनू गोटे मैथिलीक सेवा करैत रहलाह अछि। एकसँ एक विषयक ग्रंथक रचना कऽ ओकर प्रकाशन सेहो करैत रहलाह अछि जाहिसँ मैथिली साहित्यक भंडारमे वृद्धि होइत रहल अछि।

ओना डॉ. अरविन्द 'अक्कू'केँ अपन बाबाक सान्निध्य नहि भेटल छलनि कारण ओहि समयमे हिनक जन्म नहि भेल छलनि। हिनक "जन्म - 19 जुलाई, 57, इसहपुर, मधुबनी"[4]मे भेल छनि आ हिनक बाबाक मृत्यु 26 जनवरी 1955 ईकेँ भेल छलनि मुदा विद्वान पिताक सान्निध्य सतत भेटैत रहलनि अछि आ ओकरे परिणाम थिक पूर्वक जे कृतिक कीर्तिमान छलैक ओकरा ई तोड़ि आओर आगू बढ़ा देलाह जे गौरवक गप थिक।

हिनक जन्मक संबंधमे हिनक रचित पोथी सभपर जे विवरण देल गेल अछि ओहिमे अधिकांश पोथीपर 19 जुलाइ 1957 ई. लिखल अछि मुदा नवारम्भसँ प्रकाशित 'मीनाक्षी' (मनमोहन झाक कथापर आधारित मैथिली नाटक)क अंतिम आवरण पृष्ठपर "जन्म : 17 जुलाइ 1957"[5] छापल अछि। हमरा बुझने ई प्रिंटिंग-मिस्टेक अछि।

हिनक शिक्षाक संबंधमे जनतब भेटैत अछि - "बी. ए., बी. एड्. एम. ए., पीएच. डी."[6] कयने छथि। ई "एम. ए. (संस्कृत)"[7]विषय कयने छथि। ई "गवेषक, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय"[8]मेरहल छथि।

हिनक "वृत्ति : राजकीय सेवा, पटना उच्च न्यायालय"[9] मे रहल छनि। एखन अवकाश प्राप्त छथि।

डॉ. अरविन्द 'अक्कू'क साहित्यिक परिचय 'आगि धधकि रहल छै' नामक नाटकसँ आरम्भ होइत अछि। ई हिनक पहिल नाट्य कृति अछि। एकर प्रकाशन वर्ष 1981 ई. अछि।

'आगि धधकि रहल छै' नाटकमे निम्नलिखित पात्र सभ अछि-

"डॉक्टर : मानसिक चिकित्सक, युवा

रामसिंह : मानसिक चिकित्सालयक हवलदार, अधवयसू

नम्बर – 132 : गरीब पागल, अधवयसू

नम्बर– 134 : बेरोजगार पागल, युवा

नम्बर– 55 : राजनैतिक पागल, अधवयसू

नम्बर –125: प्रेमी पागल, युवा

नम्बर – 11 : महिला पागल, आकर्षक युवती”[10]

एहि नाटकक पात्र सबक वयसक सूचना पत्र–परिचयमे नहि देल गेल अछि।

हिनक दोसर नाट्य कृति ‘ताल मुट्ठी’ अछि जे 1982 ई.मे प्रकाशित कराओल गेल अछि। एकर पात्र सभ अछि–

“पुरुष पात्र :–

(1) प्रकाश : 25 वर्ष, गजाधर बाबूक पहिल पत्नीक सन्तान,परिश्रमी, नोकरीक लेल व्याकुल।

(2) प्रेमू : 19 वर्ष, गजाधर बाबूक दोसर पत्नीक सन्तान,फन्टूस,माइक बिगड़ल पूत।

(3) गजाधर बाबू : 57 वर्ष, किरानी बाबू, रिटाएर करबाक स्थिति मे। पुत्र ओ पत्नीसँ तबाह। मुँहदब्बू किन्तु इमानदार।

(4) पीताम्बर बाबू : 52 वर्ष, गजाधर बाबूक मित्र ओ शुभचिन्तक, अत्याधुनिक विचारधारा बला।

(5) वर्मा : २२ वर्ष, प्रकाशक अभिन्न मित्र, उग्रपंथी दलक कर्मठ सदस्य ओ भूमिगत आन्दोलनमे सक्रिय। अस्तव्यस्त केश ओ धनगर दाढ़ी।

(6) बतहा : 40 वर्ष, अर्धनग्नावस्थामे, पूर्णरूपेण विक्षिप्त।

स्त्री पात्र :–

(1) प्रकाशक माए : गजाधर बाबूक दोसर पत्नी, 32 वर्ष, प्रकाशक सतमाए झगड़ाह जो दुष्ट, सतौतक मुद्दइ।

(2) नीलू : 20 वर्ष, प्रकाशक स्त्री, सुन्दर, सुशील, ओ सज्जन।”[11]

हिनक तेसर नाट्य कृति ‘पातक मनुक्ख’ अछि जे 1987 ई.मे दुर्गा नाट्य कला परिषद्, इसहपुर, मधुबनी, द्वारा प्रकाशित कराओल गेल अछि। ई मौलिक नाटक नहि छैक। ई पं. गोविन्द झाक कथाक नाट्य रुपान्तरण छैक।

एकर पात्र सभ अछि–

“पुरूष पात्र

1. बतहू
2. फुदन ठाकुर
3. संतोषी मिसर
4. पण्डित जी

5. भोलाबाबू
6. बिलट
7. प्रकाश
8. पहिल ग्रामीण युवक
9. दोसर ग्रामीण युवक
10. नेना

स्त्री पात्र

11. लालगंजबाली
12. बहिनजी"[12]

एहि पात्र सभक उम्र नहि बताओल गेल अछि। नाटक मे पात्रक उम्र निश्चित रूपसँ बताओल जाइत अछि।

हिनक चारिम नाट्य कृति 'एना कते दिन' अछि जे चेतना समिति द्वारा 1985 ई.मे प्रकाशित कराओल गेल छलैक। एहि नाटकक पात्र सभ अछि–

"पात्र – परिचय

पुरुष पात्र :–

(1) जगदीश बाबू – 60 वर्ष, वृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी आ आदर्श चरित्र,(सामाजिक ओ राजनैतिक व्यवस्था से कुपित।

(2) अरुण– 30 वर्ष, जगदीश बाबूक जेठ बालक आ पत्नीक रोब सँ दबल।

(3) अभय– 27 वर्ष, जगदीश बाबूक छोट बालक, नोकरीक लेल बेचैन। पिताक भक्त मुदा उग्र स्वभावक।

(4) फूल बाबू –55 वर्ष, रजनीक मौसा, जगदीश बाबूक मित्र, अवसरवादी, चरित्रहीन, धनक पाछ बेहाल।

(5) मनोज – फूल बाबूक पुत्र, अभयक संगी, पिते जकाँ घोर अवसरवादी।

(6) नेना – 10 वर्ष, जगदीश बाबूक पड़ोसीक बालक।

स्त्री पात्र -

(1) बौआक माए – 52 वर्ष, जगदीश बाबूक पत्नी, केहनो परिस्थितिसँ समझौता कर' वाली, मृदुभाषिणी ।

(2) रजनी – 25 वर्ष, अरुणक पत्नी, पति पर हावी, झगड़ाउ स्वभाव, पति छोड़ि अनका सँ कोनो सरोकार नहि।"[13]

हिनक पाँचम नाट्य कृति 'अन्हार जंगल' अछि।ई 1985 ई.मे प्रकाशित कराओल गेल छलैक। एहि नाटकक पात्र सभ अछि–

"पात्र – परिचय

पुरुष–पात्र–

(1) रबिया – 45 वर्ष, चाहबला। अनपढ़ मुदा बुझनुक आ संग–संग उचितवक्ता।

(2) बुधना – 20 वर्ष, रबियाक बेटा।

(3) मनोज – 25 वर्ष, शिक्षित नोकरिहारा युवक, ग्राम सुधारक प्रवृत्ति, मास्टरक सहयोगी।

(4) रमन – 24 वर्ष विक्षिप्त, प्रकाशक छोट भाय।

(5) प्रकाश – 30 वर्ष, रमनक भाय, दयाक पात्र, बौक मुदा ज्ञानी।

(6) मास्टर – 35 वर्ष, योग्य एवं कर्मठ, अन्यायक विरुद्ध संघर्षरत। एक पएरसँ नाङड़।

(7) अवधूबाबू – 50 वर्ष, धनवान, दुष्ट स्वभाव, स्वार्थसँ आन्हर, निम्नस्तरक राजनीतिमे लीन।

(8) मालबाबू – 45 वर्ष लोभी, अवधूबाबूक दुष्कर्ममे सहयोगी।

(9) ठठरा – 60 वर्ष, चमार, मुहदब्बू, बड़कागाम वालीक पति, बिल्टाक बाप।

(10) बिल्टा – 25 वर्ष, ठठराक बेटा, कर्मठ मुदा उग्रस्वभाव।

(11) भोलवा – 25 वर्ष, गामक जन, सोलकन।

स्त्री– पात्र –

(12) बड़कागामवाली – ठठराक स्त्री, 50 वर्ष, बिल्टाक, माए, स्नेहसिक्त हृदय, सबहक उपकार कर' लेल व्यग्र।"[14]

हिनक छठम नाट्य कृति 'आतंक' अछि।ई 1988 ई.मे प्रकाशित कराओल गेल छलैक।

हिनक सातम नाट्य कृति 'रक्त' अछि।ई 1990 ई.मे प्रकाशित कराओल गेल छलैक। एहि नाटकक पात्र सभ अछि–

"पात्र – परिचय

पुरुष पात्र–

(1) किसुन – चाहबला, 40 वर्ष

(2) रमुआ – चाहबलाक नौकर, 15 वर्ष

(3) करीम मियां – पानबला, 45 वर्ष

(4) डोमन – चचरी बेचऽबला, 70 वर्ष

(5) बड़ाबाबू – अस्पतालक किरानी, 40 वर्ष

(6) भागिन – डाक्टर, मरीजक सम्बन्धी, 25 वर्ष

(7) मामा – मरीजक समांग, डाक्टरक माम 35 वर्ष

(8) रामौतार – खून बेचऽ बला, 32 वर्ष

स्त्री पात्र–

(9) बुढ़िया – सन्तान लेल विकल, अर्धविक्षिप्त

(10) देवीजी – अस्पतालक दाइ, 30 वर्ष

एकर अतिरिक्त पाँच छह गोट पुरुषपात्र आओर।"[15]

हिनक आठम नाट्य कृति 'के ककर' अछि। ई 1996 ई.मे प्रकाशित कराओल गेल छलैक। एहि नाटकक पात्र सभ अछि–

"पात्र – परिचय

पुरुष पात्र–

1. उग्रनाथ
2. दादाजी उग्रनाथक पिता
3. बन्टी उग्रनाथक पुत्र
4. मदन उग्रनाथक सार
5. भवेश उग्रनाथक पितियौत भाय
6. पाठक भवेशक मित्र
7. रायजी भवेशक मकान मालिक
8. गुप्ता सप्लायर
9. राकेश भवेशक पुत्र

स्त्री पात्र :–

1. लक्ष्मी उग्रनाथक पत्नी
2. मोना उग्रनाथक छोट बेटी
3. मालती भवेशक पत्नी

नेना पात्र :–

1. पिंकी भवेशक छोटकी बेटी"[16]

एहि नाटकक पात्र सबक वयसक सूचना पत्र–परिचयमे नहि देल गेल अछि।

एहि सभ नाटकक अतिरिक्त आओर नाटक ई लिखने छथि जे निम्नलिखित अछि–

1. वाह रे हम वाह रे हमर नाटक, 1997
2. पढुआ कक्का अएला गाम, 1997
3. गुलाबछड़ी, 1998
4. राज्याभिषेक, 2003
5. अलख निरंजन, 2008
6. तेसर घर, 2009
7. झिझिर कोना, 2011
8. सात जोड़ी आँखि (सात गोट नाटकक संकलन), 2013
9. फुटानी चौक, 2017
10. बटुआवाली मैयाँ, 2019
11. मीनाक्षी, 2020

12. कमला मे भसियाइत सीता, अनुप्रास प्रकाशन द्वारा

एकर अतिरिक्त आओर रचना सभ अछि जे दोसर विधाक अछि –

1. कही त गाबि सुनाबी, गीत संकलन
2. चानीक रूपैया, गीत संकलन
3. घुरि आउ गाम, गीत संकलन
4. मानो दाइक हबेली, कथा संग्रह

वर्ष 2024मे चेतना समिति, पटनामे हिनक लिखल नाटक – 'बोकबा रहल कुमारे'क मंचन कयल गेल छलैक। एकर सभक अतिरिक्त आओर कृति सभ प्रकाशनाधीन अछि जे जल्दीये पाठकक बीच आबयबाला अछि। एकर हमरा सबकेँ प्रतीक्षा अछि।

संदर्भ सूची

1. परिचायिका – डॉ. भीमनाथ झा, भवानी प्रकाशन, मुसल्लहपुर, पटना–800006, 1985, पृष्ठ संख्या– 152
2. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 152
3. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या–47
4. आतंक – डॉ. अरविन्द 'अक्कू', चेतना समिति, विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग, पटना– 1, 1994, पृष्ठ संख्या– अंतिम आवरण पृष्ठ
5. मीनाक्षी – डॉ. अरविन्द 'अक्कू',नवारम्भ, मधुबनी/पटना, 2020, पृष्ठ संख्या–अंतिम आवरण पृष्ठ
6. के ककर – डॉ. अरविन्द 'अक्कू',चेतना समिति, विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग, पटना– 1,1996, पृष्ठ संख्या– अंतिम आवरण पृष्ठ
7. ताल–मुट्ठी – डॉ. अरविन्द 'अक्कू', दुर्गा नाट्य कला परिषद्, इसहपुर, मधुबनी, 1982, पृष्ठ संख्या–अंतिम आवरण पृष्ठ
8. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– अंतिम आवरण पृष्ठ
9. आतंक – डॉ. अरविन्द 'अक्कू',चेतना समिति, विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग, पटना– 1,1994, पृष्ठ संख्या–अंतिम आवरण पृष्ठ
10. आगि धधकि रहल छै – डॉ. अरविन्द 'अक्कू',चेतना समिति, विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग, पटना– 1, 1981, पृष्ठ संख्या– – 3
11. ताल–मुट्ठी – डॉ. अरविन्द 'अक्कू', दुर्गा नाट्य कला परिषद्, इसहपुर, मधुबनी, 1982,पृष्ठ संख्या– –3
12. पातक मनुक्ख– नाट्य रुपान्तरण, डॉ. अरविन्द 'अक्कू', दुर्गा नाट्य कला परिषद्, इसहपुर, मधुबनी, 1987,पृष्ठ संख्या– 0
13. एना कते दिन – डॉ. अरविन्द 'अक्कू',चेतना समिति, विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग, पटना– 1, 1985, पृष्ठ संख्या– 0
14. सात जोड़ी आँखि– डॉ. अरविन्द 'अक्कू', साहित्यिकी प्रकाशन, सरिसब–पाही, मधुबनी, 2013, पृष्ठ संख्या– 2
15. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 88
16. के ककर – डॉ. अरविन्द 'अक्कू',चेतना समिति, विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग, पटना– 1,1996, पृष्ठ संख्या–3